संपादक की कलम से...

मनुष्य में जिज्ञासा की प्रवृत्ति जन्म से होती है। जिज्ञासा के चलते ही हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पाते हैं। मानव को जिज्ञासा ही नए पथ पर चलने की प्रेरणा देती है। जिज्ञासा ही जीवन की सफलता की कुंजी है। मनुष्य की इस प्रवृत्ति के कारण ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में दिन-प्रतिदिन प्रगति देखने को मिल रही है। शोध भी मनुष्य की जिज्ञासा का परिणाम है। शोध के माध्यम से नई सृष्टि का दर्शन होता है। ज्ञान के प्रति गहरी उत्सुकता मनुष्य को निरंतर शोध-कार्य की ओर आकर्षित करती है। मानव सभ्यता के इतिहास को हम शोध के इतिहास से जोड़ सकते हैं। जैसे-जैसे मनुष्य प्रगति के पथ पर आगे बढ़ा, उसने ज्ञान प्राप्त करने के नए तरीकों की खोज की। दुनिया के कोने-कोने में, हर क्षेत्र में आज नए-नए शोध हो रहे हैं, जो हमारे ज्ञान को समृद्ध कर रहा है। शोध ज्ञान के समस्त रूपों के अध्ययन का आधार है। अज्ञात को ज्ञात करना और ज्ञात को पुनर्व्याख्या द्वारा स्पष्ट और व्यवस्थित करना ही शोध की मुख्य विशेषता है। भारत बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक देश रहा है। भारत का यह पूर्वोत्तर क्षेत्र भी भाषा, साहित्य और संस्कृति की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। इन क्षेत्रों में शोध की अपार संभावनाएँ हैं। पूर्वोत्तर पर आधारित सामग्री का हिंदी भाषा में नितांत अभाव है और मुझे लगता है कि इसका निदान अनुवाद के साथ-साथ तुलनात्मक शोध से संभव है। पूर्वोत्तर भारत की भाषा, साहित्य और संस्कृति को लेकर हिंदी में अनेक शोध कार्य यहाँ के विश्वविद्यालयों में हुए हैं और आज भी हो रहे हैं।

'पूर्वोत्तर प्रभा' का यह दूसरा अंक है। प्रस्तुत अंक में 24 शोधालेखों को संपादक मंडल के निर्णय के अनुरूप प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें प्रकाशित सभी शोधालेखों के विषय विविध हैं जिसे प्रकाशित करते हुए गर्व की अनुभूति हो रही है। संपादक मंडल के सदस्यगण एवं जर्नल से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी विद्वतजनों के प्रति कृतज्ञ हूँ। शुभकामना संदेश के लिए हमारे जर्नल के संरक्षक आदरणीय कुलपति महोदय को संपादक मंडल की ओर से आभार एवं बहुत बहुत धन्यवाद।

मैं इस अंक के सभी लेखकों के प्रति, अपने पाठकों के प्रति एवं अपने सहयोगी साथियों के प्रति हृदय से आभार प्रकट करता हूँ, जिनके सहयोग के चलते पत्रिका का यह अंक प्रकाशित हो पाया है। 'पूर्वोत्तर प्रभा' के कलेवर में निरंतर सुधार हेतु आप सभी के उपर्युक्त दिशा-निर्देश एवं परामर्श की कामना करते हुए आप सभी को यह अंक अर्पित है।

दिनेश साहू
संपादक, पूर्वोत्तर प्रभा